PHARMA दर्पण
Editor- Brejesh Garg | www.medicaldarpan.com | Monthly News Paper
B.N. Medical Complex, Bulandshahr (U.P.) Postal Reg. No. BSR 52/2023-2025 RNI UPBIL/2011/50248
Year 15 | Issue 09 | D.O.P. 20 JULY 2025 | Pages 08 | ₹ 10/- Copy | ✆ 09045029158, medicaldarpan.ctp@gmail.com

Hillwin Pharmaceuticals
THIRD PARTY MANUFACTURING & FRANCHISEE/PCD
Best quality of efficiency Product we directly approved by WHO GMP
With the Wide Range of :
Tablets | Capsules | Liquids | Dry Syrup | Injectables | Drops | Lotions | Gels | Ointments | Shampoos | Protein Powders | Ayurveda Products | Neutraceuticals
Excellent Packing Like Alu-Alu, Blister & Strip Packing
Brand Promotional Input Like...
Visual aid, Sample Catch covers, Visiting Cards, Product Literature, MR Bags, DCR Pad, Gifts
Trade Enquiries are Welcome for Third Party MFG. / PCD Franchises Distribution on Monopoly basis in PAN India.
CALL US : +91 8476855579 , 9476782423
Head Office : B-39, New Shopping Complex, Opp. PNB Bank Shivalik Nagar, Haridwar (U.K.)

सरकारी सप्लाई के इंजेक्शन दुकान से किए बरामद

सिकरहना (बिहार)। प्राप्त समाचार के अनुसार सरकारी सप्लाई के इंजेक्शन दुकान से बरामद किए जाने का मामला प्रकाश में आया है। ढाका पुलिस ने एक भूंजा दुकान पर छापेमारी की और एक कार्टून में रखी सरकारी दवा बरामद की है। कार्टून में सरकारी स्टीकर लगे हुए काफी मात्रा में गैस के इंजेक्शन रखे हुए थे। पुलिस ने दवा को जब्त कर लिया है। भूंजा दुकान में शराब बेचे जाने की सूचना पर पुलिस छापेमारी करने गयी थी। छापेमारी के दौरान पुलिस को शराब तो नहीं मिली, लेकिन सरकारी दवा मिल गयी। पूछे जाने पर दुकानदार ने इस संबंध में पुलिस को कुछ भी स्पष्ट रूप से जानकारी नहीं दी। अस्पताल सूत्रों के अनुसार यह दवा एक एएनएम ने वहां लाकर रखी थी, जिसका ट्रांसफर यहां से हो चुका है। उसे क्षेत्र के लिए यह दवा दी गयी थी। जब उसका ट्रांसफर हुआ तो वह यहां रखकर चली गयी। थानाध्यक्ष राजरूप राय ने बताया कि इस संबंध में अस्पताल प्रभारी से जानकारी मांगी गयी है। जानकारी मिलने के बाद मामले में कार्रवाई की जायेगी। इस बाबत पीएचसी प्रभारी डॉ. जितेन्द्र कुमार ने बताया कि दवा का स्टॉक मिलाने के लिए स्टोर कीपर व मैनेजर को निर्देश दिया है। जानकारी मिली है कि एक एएनएम चांदनी कुमारी का ट्रांसफर दूसरी जगह हो गया है। उससे भूलवश यह दवा उक्त दुकान में छुट गयी है। वह दवा लेकर ग्रामीण क्षेत्र में स्थित स्वास्थ्य केन्द्र पर गयी थी। ट्रांसफर होने के बाद वह दवा लेकर वापस जमा कराने के लिए अनुमंडलीय अस्पताल में आयी थी। लेकिन वह दवा जमा नहीं करा पायी और दवा वहां रख दी। फिलहाल मामले में जांच जारी है और जांच के बाद ही हकीकत का पता चल पायेगा।

Our General Divisions: MERRIL | MESTRA | STERILE GENETICS
For any query :- 9719839944
We have more than 2000 Products in our Successfully Running Company.
New Molecules available
Natural Progesterone 200/300/100 mg Tab.
Rifaximine 200/400/550 & Metronidazole 400 mg Tab.
Sultamycillin 375 mg Tab.
Dydrogesterone Tablets IP 10 mg
Emocare | NUECAD Cardio-Diabetic division | Womana Gyne-infertility division | BEAUKIN
Piraciti-Plus | Metolip-ER 25/50 | Gensure-Sachet | Antihist-D
Velpy-200/300/500 | Nuepido-AS | Gensure-LC | Tacroril
Emofexine Tab. | Nuepido-Plus | NMPC-softgel/SR tab/ Inj. | Candigel
Emofexine Plus -50 | Tenzex-M | Gensure-F | Eberil
Registered Office :-A-401/402, Empire Business Hub, Science City Road, Ahmedabad-380060 (Gujarat)-India,
Email : order@mestrapharma.com, Website : www.mestrapharma.com

Biounity Pharma
SERVICES
Third Party Manufacturing
Contract Manufacturing
PCD Pharma Franchise
Committed to Healthcare through Innovation & Quality
WE OFFER
MORE THAN 1000 PRODUCTS | EXCEPTIONAL PROFIT MARGIN
PROMPT / TIMELY DELIVERY | COMPLETE MONOPOLY RIGHTS
EXCLUSIVE PROMOTIONAL MATERIAL | ATTRACTIVE PACKING
Supernova Life Drug Pvt. Ltd.
(An GMP Certified Company adhering to the latest revised "SCHEDULE M")
Wide Therapeutic Range
Contact No. : +91 8449549885, +91 9557627998
po.pharmabiounity@gmail.com
mkt.biounitypharma@gmail.com
Marketing.ekta@supernovalifedrugs.com
Orthopadic, Gynecare, Gastroenterology | Anti-Infective, Urology Care, Anti-Allergic | Cardiovascular, Anti-Diabetic, Cough & Cold
Bronchodilator, Paediatric, Respiratory | Injectables, Neuropsychiatry, Nutritional Supplements | OTC Products, Derma Care, Eye/Ear/Nasal Drops

INDIAN PHARMA FAIR
07 & 08 November 2025
PALACE GROUND GATE NO. 9 (PRINCESS SHRINE)
Mekhri Circle Entrance, Bellary Road, BANGALORE
ANCHEM Laboratories Pvt. Ltd
DEVOTED TO HEALTHCARE
Business Excellence Award 2025
For Pharma & Healthcare Awarded By
Shri Shivpratap Shukla
Honorable Governor of Himachal Pradesh
Welcome you to Indian Pharma Fair
for Betalactum
Tablets / Capsules / Dry Syrup
for Non - Betalactum
Tablets / Capsules / Syrup
Best 3rd Party / PCD Manufacturing
Stall No. A23
Dr. Ashok Kumar Gaur, MBA, PhD (HON), Chief Executive Officer
+91 7297901947
29, IInd Floor, Canam Plaza, SCO-45, Sector - 11, Panchkula - 134109 (Haryana)
www.anchemlaboratories.com | info@anchemlaboratories.com
anchemlaboratoriespvtltd@gmail.com

PCD / FRANCHISEE
INVITING PROPOSAL FOR FRANCHISEE ACROSS COUNTRY
V & U Pharmaceuticals
A NAME SYNONYMOUS TO QUALITY & TRUST
Where Quality is the Core
All Products of V & U Pharmaceuticals are manufactured under stringent quality control in approved manufacuring facilities.
1. One of the best quality products and packaging.
2. Attractive Pricing./ 3.Attractive Bonanza
4. Comprehensive & expanding produt basket
5. Expert Marketing Support/ Print Inputs.
TABLETS/CAPSULES, SYRUPS/LIQUIDS, RESPULES/ROTACAPS, DEVICES/CREAMS
Contact: 7017051435/9999355975
V & U PHARMACEUTICALS
H-1.39N,RIICO Industrial Area, Khushkhera, Bhiwadi, Distt:Alwar, Rajasthan 301707
sales@vnupharmaceuticals.com; vnupharmaceuticals@gmail.com
www.vnupharmaceuticals.com

अवैध दवाओं से लदे भारत के 25 कंटेनर पकड़े

अबुजा। नकली और अवैध दवाओं से लदे भारत के 25 कंटेनर पकड़े गए हैं। नाइजीरिया सीमा शुल्क सेवा (एनसीएस) ने भारत से आयातित नकली दवाओं से लदे 25 कंटेनरों को पकडने की घोषणा की। एनसीएस ने आगे की जाँच के लिए जब्त वस्तुओं को राष्ट्रीय खाद्य एवं औषधि प्रशासन एवं नियंत्रण एजेंसी को सौंप दिया। सीमा शुल्क महानियंत्रक, बशीर अदेवाले अदेनियी ने बताया कि 9.2 अरब नाइजीरियाई नाइरा के शुल्क भुगतान मूल्य वाले ये उत्पाद भारत से आयात किए गए थे। ये जब्ती आपराधिक उद्यमों के एक परिष्कृत नेटवर्क का प्रतिनिधित्व करती है।

Skin Care Products
A Complete Range More than 250 Products
300 Franchisee All India
e-derma Pharma India Pvt. Ltd.
(An ISO 9001:2015 Certified Company)
9034435000, 9034635000
edermapharma@hotmail.com
www.edermapharma.com

PD PAPER JULY 2025_32 Inch January. 2021.qxd 7/29/2025 11:39 AM Page 2

हार्ट अटैक से मौत में कोविड वैक्सीन का संबंध नहीं : आईसीएमआर

नई दिल्ली। प्राप्त समाचार के अनुसार हार्ट अटैक से होने वाली मौतों से कोविड वैक्सीन का कोई संबंध नहीं है। यह दावा भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर) और राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) ने शोध के आधार पर किया है। दोनों संस्थानों के रिसर्च से पुष्टि हुई है कि भारत में कोविड-19 के टीके सुरक्षित और प्रभावी हैं। इनमें गंभीर दुष्प्रभावों के मामले बहुत कम देखने को मिलते हैं। हार्ट अटैक से मौत पर कोरोना टीकों का कोई संबंध नहीं है। बताया गया कि हार्ट अटैक से मौत के कई कारण हो सकते हैं। इनमें आनुवंशिकी, जीवनशैली, पहले से मौजूद बीमारियां और कोविड के बाद की जटिलताएं शामिल हैं। आईसीएमआर और एनसीडीसी ने 18 से 45 साल के बीच के लोगों में हार्ट अटैक से मौतों के पीछे कारणों पर शोध किया गया। साबित हुआ है कि कोविड-19 टीकाकरण से युवा वयस्कों में अचानक होने वाली मौतों का जोखिम नहीं बढ़ता है। रिसर्च के शुरुआती विश्लेषण से सामने आया कि युवाओं में अचानक मौत का प्रमुख कारण दिल का दौरा या मायोकार्डियल इंफार्क्शन (एमआई) बना हुआ है। शोध पूरा होने के बाद अंतिम परिणाम साझा किए जाएंगे। यह भी पता चला है कि कोविड-19 टीकाकरण से जोखिम नहीं बढ़ता है। अंतर्निहित स्वास्थ्य समस्याओं, आनुवंशिक प्रवृत्ति और जोखिम भरी जीवनशैली अचानक मौतों में भूमिका निभाती है। वैज्ञानिकों ने दावा किया कि कोविड टीकाकरण को अचानक होने वाली मौतों से नहीं जोड़ा जा सकता।

वेट लॉस वाली दवाओं की जांच करे डीसीजीआई : हाईकोर्ट

नई दिल्ली। वेट लॉस वाली दवाओं की जांच करने के लिए दिल्ली हाईकोर्ट ने औषधि महानियंत्रक को निर्देश दिए हैं। हाईकोर्ट ने डीसीजीआई को वजन घटाने वाली दवाओं की मंजूरी एवं बिक्री को चुनौती देने वाली याचिका के संबंध में जांच करने को कहा। साथ ही हाईकोर्ट ने इसका समाधान निकालने को भी कहा है। अदालत ने डीसीजीआई को किसी भी अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले चिकित्सा विशेषज्ञों, हितधारकों व दवा निर्माताओं से परामर्श जारी करने को भी कहा है। मुख्य न्यायाधीश डी. के. उपाध्याय एवं न्यायमूर्ति तुषार राव गेडेला की पीठ ने उठाए गए मुद्दों को स्वीकार किया है।

ब्रिटानिया के बिस्किट में मिला जिंदा कीड़ा, 1.5 लाख जुर्माना

मुंबई। ब्रिटानिया कंपनी के बिस्किट के पैकेट में जिंदा कीड़ा पाए जाने का मामला सामने आया है। इसके चलते मुंबई की एक अदालत ने कंपनी पर 1.5 लाख रुपये का जुर्माना लगाया है। उपभोक्ता अदालत ने गुड डे बिस्किट बनाने वाली ब्रिटानिया कंपनी को पीडित महिला को कानूनी कार्रवाई के तौर 25 हजार रुपये देने का आदेश दिया है। उक्त महिला ने गुड डे के पैकेट में जिंदा कीड़ा मिलने पर केस दायर किया था। मीरा रोड निवासी महिला ने 2019 में चर्चगेट स्थित केमिस्ट की दुकान से गुड डे बिस्कुट का एक पैकेट खरीदा था। महिला ने बताया कि कुछ बिस्किट खाने के बाद उसे एक बिस्किट में जिंदा कीड़ा मिला। इससे उसे मतली, उल्टी और मानसिक परेशानी होने लगी। उसने बिस्किट को सुरक्षित रख लिया और बृहन्मुंबई नगर निगम (बीएमसी) की म्यूनिसिपल फूड लेबोरेटरी से संपर्क किया। उसने अगस्त 2019 में एक रिपोर्ट में बाहरी पदार्थ की मौजूदगी की पुष्टि की। महिला ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम के तहत जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग से शिकायत की।

विवाह पूर्व थैलेसीमिया परीक्षण अनिवार्य करने के लिए जल्द ही नियम बनाए जाएंगे: मंत्री

मुंबई: प्राप्त समाचार के अनुसार महाराष्ट्र सरकार जल्द ही इस रोग के उन्मूलन के लिए एक व्यापक पहल के तहत विवाह से पहले लोगों के लिए थैलेसीमिया की जांच अनिवार्य करने के लिए नियम बनाएगी, मंत्री मेघना बोर्डिकर ने गुरुवार को राज्य विधानसभा में कहा। प्रश्नक. ाल के दौरान विधायक विकास ठाकरे द्वारा उठाए गए एक सवाल का जवाब देते हुए, सार्वजनिक स्वास्थ्य राज्य मंत्री ने कहा कि महाराष्ट्र में वर्तमान में लगभग 12,860 थैलेसीमिया रोगी हैं। थैलेसीमिया एक आनुवंशिक रक्त विकार है जो शरीर की हीमोग्लोबिन और स्वस्थ लाल रक्त कोशिकाओं के उत्पादन की क्षमता को प्रभावित करता है। ठाकरे की मांग पर कि विवाह से पहले थैलेसीमिया परीक्षण अनिवार्य किया जा सकता है, बोर्डिकर ने कहा, हम जल्द ही विवाह से पहले परीक्षण अनिवार्य करने के लिए नियम बनाएंगे। उन्होंने कहा, यह एक गंभीर आनुवंशिक विकार है और अगर समय रहते इसका निदान नहीं किया गया तो यह अगली पीढ़ी में भी फैल सकता है। हमने परभणी में पायलट प्रोजेक्ट के साथ थैलेसीमिया उन्मूलन अभियान शुरू किया है, जिसे अब पूरे राज्य में विस्तारित किया जा रहा है। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि हर जिले में थैलेसीमिया उपचार केंद्र स्थापित किए जाएंगे। मंत्री ने सदन को यह भी बताया कि कैंसर डायग्नोस्टिक वैन की खरीद में कथित भ्रष्टाचार की जांच स्वास्थ्य विभाग के आयुक्त द्वारा की जा रही है। स्पीकर राहुल नार्वेकर ने निर्देश दिया कि जांच रिपोर्ट को मौजूदा सत्र के खत्म होने से पहले विधानसभा में पेश किया जाए। मुख्य सवाल शिवसेना (यूबीटी) विधायक भास्कर जाधव ने उठाया, जिन्होंने आरोप लगाया कि वैन दोगुनी कीमत पर खरीदी गईं।

औषधि निरीक्षक को भ्रष्टाचार करने पर 3 साल कारावास

भोपाल (मध्यप्रदेश)। प्राप्त समाचार के अनुसार औषधि निरीक्षक को भ्रष्टाचार करने पर 3 साल कारावास की सजा मिली है। बालाघाट में विशेष न्यायाधीश भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम के तहत वाचस्पति मिश्र ने यह सजा सुनाई। भ्रष्टाचार के मामले में आरोपी तत्कालीन औषधि निरीक्षक सतीश कुलकर्णी को 3 साल कारावास के साथ दस हजार का जुर्माना भी लगया गया है। वहीं धारा 419 में 2 साल का सश्रम कारावास और पांच हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया है। सहायक जिला अभियोजन अधिकारी अखिल कुशराम ने बताया कि मुकेश भार्गव ने 29 मार्च 2011 को शिकायत विशेष पुलिस और लोकायुक्त भोपाल को की थी। आरोपी सतीश कुलकर्णी तत्कालीन औषधि निरीक्षक का खाद्य एवं औषधि प्रशासन ने बालाघाट से जबलपुर तबादला कर दिया था। जबलपुर में ज्वाइन करने के करीब 3 माह तक बिना किसी प्रभार के बालाघाट जिले में अवैधानिक रूप से अतिरिक्त प्रभार पर बने रहे। असंवैधानिक रूप से कार्य करते हुए दवाई दुक. ानदारों को 42 ड्रग लाइसेंस जारी किए और अपने पद का दुरुपयोग कर लाखों रुपए का भ्रष्टाचार किया। इससे लाइसेंसियों को आर्थिक लाभ पहुंचाया गय। शिकायत के बाद मामले की जांच की गई। इसके बाद आरोपी के विरूद्ध अपराध दर्ज कर न्यायालय में पेश किया गया। विशेष न्यायालय ने अभियोजन ने प्रस्तुत साक्ष्य और बहस सुनने के बाद यह फैसला सुनाया है।

सुरक्षा की नई लौ: त्योहारों पर अग्निसचेतकों की तैनाती

उत्तर प्रदेश: बुलंदशहर जनपद के अग्निशमन विभाग ने एक अभिनव पहल की है। विभाग के प्रभारी श्री प्रमोद शर्मा के निर्देशन में, जिलेभर से चुने गए नागरिकों को अग्निसचेतक के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। इन अग्निसचेतकों को आग लगने की घटनाओं में त्वरित प्रतिक्रिया देने, लोगों को सतर्क करने, और आवश्यक सुरक्षा उपाय अपनाने की जानकारी दी गई है। इन्हें विशेष पहचान के लिए यूनिफॉर्म टी-शर्ट प्रदान की गई है, ताकि जरूरत के समय आमजन इन्हें तुरंत पहचान सके। प्रशासन ने बचाव व सुरक्षा से जुड़ी जानकारियाँ देने वाले पम्पलेट्स भी वितरित किए हैं, जिनमें आग लगने की स्थिति में क्या करें, क्या न करें, जैसे महत्वपूर्ण निर्देश शामिल हैं। त्योहार केवल उल्लास का नहीं, जिम्मेदारी का भी अवसर होते हैं। शिवरात्रि और रक्षाबंधन जैसे पावन पर्वों पर जब मंदिरों, बाजारों और घरों में चहल-पहल चरम पर होती है, तब सुरक्षा की सजगता भी उतनी ही जरूरी हो जाती है।

अग्निशमन अधिकारी प्रमोद शर्मा

क्या बोले अधिकारी? श्री प्रमोद शर्मा, अग्निशमन अधिकारी, ने बताया, हमारा लक्ष्य है कि त्योहार सिर्फ आनंद का ही नहीं, बल्कि सुरक्षा का प्रतीक भी बनें। अग्निसचेतक समाज और प्रशासन के बीच एक जीवित पुल की तरह काम करेंगे।

जनता की प्रतिक्रिया: स्थानीय नागरिकों ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह एक समाज-संवेदनशील पहल है जो आम जनता को भी आपदा प्रबंधन से जोड़ती है।

डिजिटलीकरण के बीच भारतीय स्वास्थ्य सेवा अस्पष्ट नुस्खों से जूझ रही

बेंगलुरु: इलेक्ट्रॉनिक स्वास्थ्य रिकॉर्ड (ईएचआर) की शुरुआत और आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन (एबीडीएम) जैसी पहलों के बावजूद, भारतीय स्वास्थ्य सेवा प्रणाली में हस्तलिखित और अक्सर अस्पष्ट नुस्खे आम बात हैं। निजी चिकित्सा केंद्रों का प्रभुत्व है। एक रिपोर्ट ने संकेत दिया कि भारत में अनुमानित 70,000 अस्पताल हैं, जिनमें से लगभग 45,000 निजी और 25,000 सार्वजनिक क्षेत्र में हैं। फिर भी ई-पर्चे और ईएचआर को अपनाने की गति धीमी है। अधिकांश रोगी संपर्क सरकारी स्वास्थ्य योजनाओं के प्रत्यक्ष दायरे से बाहर होते हैं। निजी अस्पताल बड़े कॉर्पोरेट अस्पतालों से लेकर छोटे क्लीनिकों तक के आकार में व्यापक रूप से भिन्न होते हैं, जिससे ईएचआर और ई-पर्चे का मानकीकृत कार्यान्वयन चुनौतीपूर्ण हो जाता है। कर्नाटक स्टेट डॉक्टर्स हैंडराइटिंग एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. शांतागिरी मल्लप्पा ने बताया कि केवल कुछ ही डॉक्टर डिजिटल नुस्खे बनाते हैं। इसके अलावा, गलत खुराक दी जा सकती है, जिसके परिणामस्वरूप ओवरडोज, कम खुराक या विषाक्त प्रतिक्रियाएं हो सकती हैं। इसलिए, हम इस बात पर जोर दे रहे हैं और जागरूकता पैदा कर रहे हैं कि नुस्खे बड़े अक्षरों में लिखे जाएं। मजबूत नीतिगत ढाँचों के बावजूद, हाथ से लिखे, अक्सर समझ से परे नुस्खों की जमीनी हकीकत नीति और व्यवहार के बीच अंतर को दर्शाती है। इस अंतर को पाटने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश, हितधारक जुड़ाव और स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं के बीच व्यवहार में बदलाव की आवश्यकता है, उन रोगियों के एक वर्ग ने बताया जो दवा की त्रुटियों के लक्ष्य रहे हैं और बोझिल अनुचित निदान और उपचार प्रोटोकॉल से गुजरे हैं। हमारा अवलोकन यह है कि अस्पष्ट हस्तलिखित नुस्खे गहरी प्रणालीगत जड़ता का लक्षण है जो सभी आयु समूहों के डॉक्टरों में है। चूंकि ई-प्रिस्क्रिप्शन प्लेटफॉर्म की सामर्थ्य पर सवाल उठाए गए हैं।

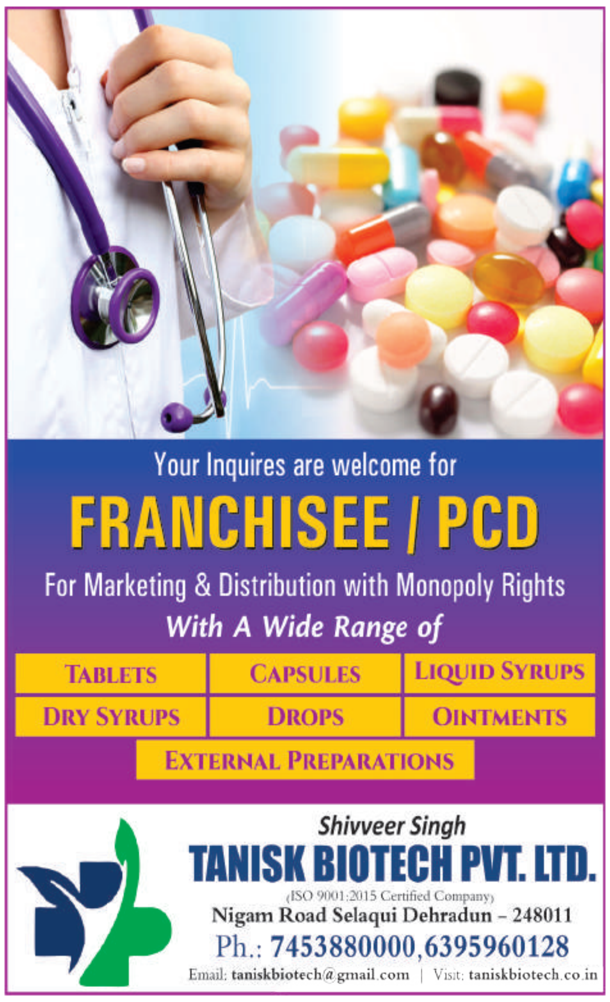

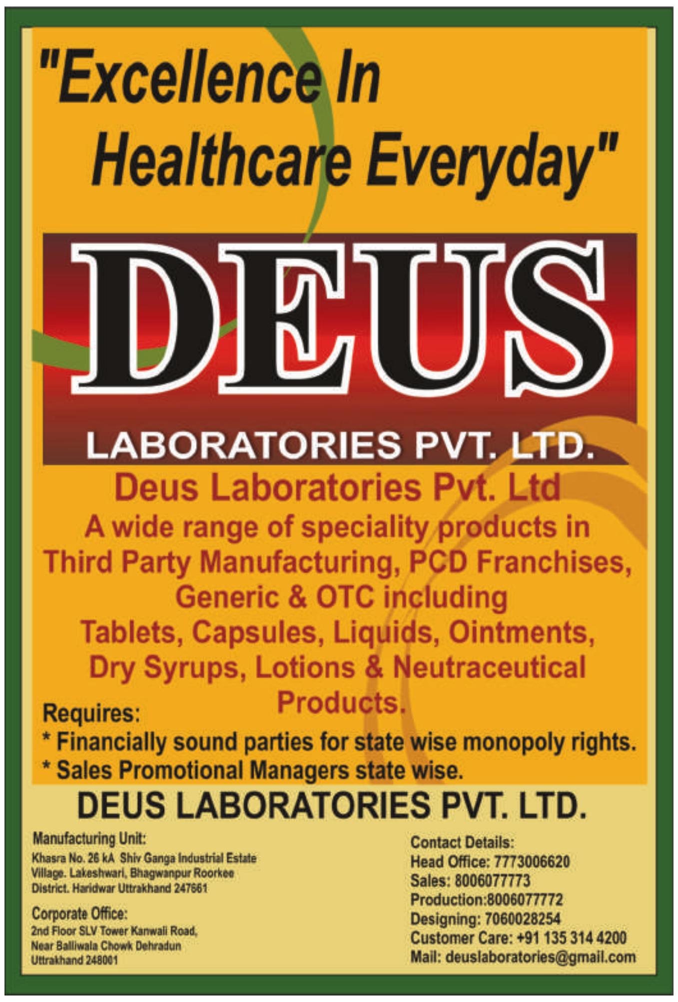

PD PAPER JULY 2025_32 Inch January. 2021.qxd 7/29/2025 11:39 AM Page 5

डायबिटीज की दवा पेटेंट खत्म होते ही हो गई सस्ती

अलीगढ़। डायबिटीज की दवा का पेटेंट खत्म होते ही इसके दाम काफी कम हो गए हैं। टाइप-2 डायबिटीज से जूझ रहे लाखों मरीजों को इससे लाभ मिलेगा। जिस दवा की कीमत करीब 700 रुपये थी, वह अब 70 प्रतिशत तक सस्ती हो गई है। इंफा-25 सॉल्ट आधारित यह दवा टाइप-2 डायबिटीज के मरीजों को दी जाती है। अब तक इसका पेटेंट एक प्रमुख फार्मा कंपनी के पास था। दवा की दस गोलियों की कीमत 650 से 700 रुपये तक होती थी। इससे लंबे समय तक इलाज करवाने वाले मरीजों की जेब पर बड़ा असर पड़ता था। हाल ही में इस दवा का पेटेंट समाप्त हो गया और बाजार में एकाधिकार खत्म हुआ। कई अन्य फार्मा कंपनियों ने भी इसका निर्माण शुरू कर दिया। प्रतिस्पर्धा के चलते दवा की कीमत में भारी गिरावट आई है। अब वही दस गोलियों की स्ट्रिप 150 से 180 रूपये में उपलब्ध है। विशेषज्ञों का मानना है कि बाजार में समान गुणवत्ता की सस्ती दवाएं आने से मरीजों को राहत मिलेगी।

रुड़की अस्पताल ने मूत्र असंयम से निपटने के लिए एमसेला प्रणाली स्थापित की

रुड़की: रुड़की के एक निजी अस्पताल, अभिलाषा नर्सिंग होम ने मूत्र असंयम के उपचार और पेल्विक फ्लोर की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए एक अत्याधुनिक, गैर-आक्रामक चिकित्सा उपकरण , एमसेला सिस्टम स्थापित किया है। अस्पताल के प्रमुख डॉ. चंद्र शेखर ग्रोवर ने कहा, पूरे भारत में केवल लगभग 50 बीटीएल एमसेला इकाइयाँ स्थापित हैं। हम उत्तराखंड के साथ-साथ पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इसे स्थापित करने वाले पहले व्यक्ति हैं। चिकित्सा और सौंदर्य उपकरणों में एक वैश्विक नेता द्वारा निर्मित बीटीएल एमसेला डिवाइस, सर्जरी या दवा की आवश्यकता के बिना पेल्विक फ्लोर की मांसपेशियों को उत्तेजित करने के लिए विद्युत चुम्बकीय पल्स तकनीक का उपयोग करता है। एक सत्र के दौरान, मरीज एक विशेष रूप से डिजाइन की गई कुर्सी पर बैठते हैं, जबकि केंद्रित विद्युत चुम्बकीय तरंगें सुपरमैक्सिमल मांसपेशियों के संकुचन को प्रेरित करती हैं - स्वैच्छिक व्यायाम के माध्यम से प्राप्त किए गए संकुचन से कहीं अधिक मजबूत। अस्पताल के विशेषज्ञों ने बताया कि कुर्सी पर 28 मिनट का एक सत्र 11,000 से अधिक मांसपेशियों के संकुचन पैदा करता है, जो हजारों केगेल व्यायाम करने के बराबर है। यह उपचार स्त्री रोग, मूत्रविज्ञान और सौंदर्य चिकित्सा में व्यापक रूप से लागू किया जाता है और प्रसवोत्तर महिलाओं, बुजुर्ग रोगियों और प्रोस्टेट से संबंधित प्रक्रियाओं से उबरने वाले व्यक्तियों के लिए विशेष रूप से प्रभावी है। एमसेला सिस्टम की स्थापना लागत लगभग 40 लाख रुपये थी। ग्रोवर ने कहा, यह उन्नत तकनीक एक व्यापक समस्या के लिए जीवन बदलने वाला, गैर-आक्रामक समाधान प्रदान करती है।

डाक पार्सल वैन से प्रतिबंधित कोरेक्स सिरप की तस्करी पकड़ी

सहरसा (बिहार)। प्रप्त समाचार के अनुसार डाक पार्सल वैन से प्रतिबंधित कोरेक्स सिरप की तस्करी करने का मामला पकड़ में आया है। जिले की उत्पाद विभाग टीम ने यह सफलता पाई। रहूआमणि गांव में छापेमारी कर भारी मात्रा में प्रतिबंधित कोडीनयुक्त नशीली दवा बरामद की है। गुप्त सूचना के आधार पर एक बोलेरो पिकअप (पार्सल वैन) की तलाशी ली गई। इसमें छिपाकर रखी गई कोरेक्स नामक प्रतिबंधित दवा की 4200 बोतलें बरामद की गई। छापेमारी के दौरान मौके से एक तस्कर सौरभ कुमार उर्फ राजा निवासी सहरसा को गिरफ्तार किया है। पूछताछ के दौरान तस्कर ने स्वीकार किया कि इन दवाओं को अवैध रूप से नशे के कारोबार के लिए अन्य जिलों में भेजा जाना था।

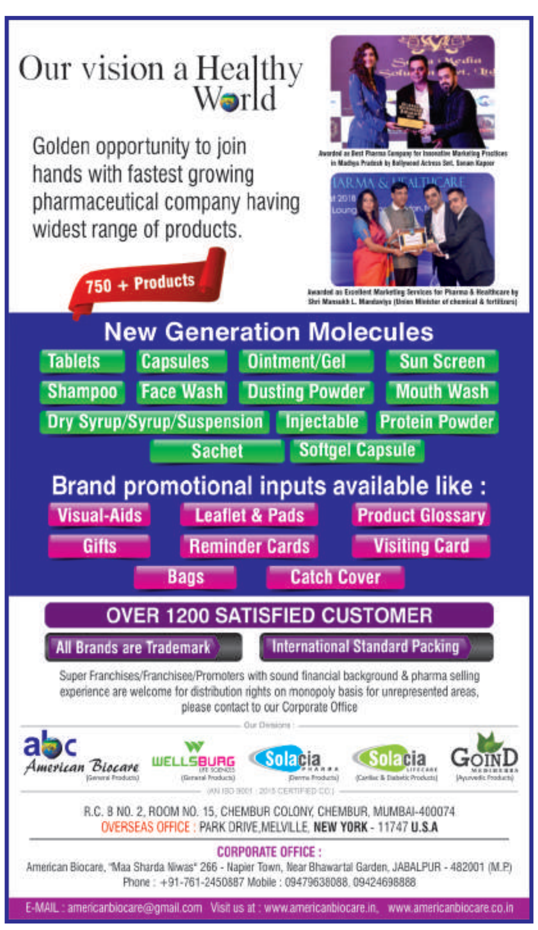

4 वर्ष तक घर बैठे यह समाचार पत्र पढ़ने के लिये हमारे पंजाब नैशनल बैंक के **खाता संख्या 1824002100118703,** IFSC Code - PUNB0145020 जो कि फार्मा दर्पण के नाम से है, में रू० 500/- जमा कर अपना पूरा पता हमारे फोन नं०- 7037629158 पर SMS कर दें।

PD PAPER JULY 2025_32 Inch January. 2021.qxd 7/29/2025 11:39 AM Page 6

भारत का जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र पिछले दशक में लगभग पांच गुना बढ़ा: डीबीटी सचिव

नई दिल्ली: भारत के जैव प्रौद्योगिकी क्षेत्र ने पिछले दशक में तेजी से विस्तार किया है, इसकी जैव अर्थव्यवस्था 2014 में 35.5 बिलियन अमरीकी डॉलर से बढ़कर 2024 में 165.7 बिलियन अमरीकी डॉलर हो गई है, यह जानकारी जैव प्रौद्योगिकी विभाग (डीबीटी) के सचिव राजेश एस गोखले ने दी। उन्होंने कहा कि अब यह क्षेत्र 2030 तक 300 बिलियन अमरीकी डॉलर का लक्ष्य लेकर चल रहा है, क्योंकि वैज्ञानिक प्रगति औद्योगिक और सार्वजनिक स्वास्थ्य लाभ में तब्दील होने लगी है। डीबीटी की 11 साल की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में गोखले ने कहा, जैव प्रौद्योगिकी अब एक सीमांत विषय नहीं रह गया है, यह अब भारत की आर्थिक और स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के लिए एक रणनीतिक चालक है। उन्होंने कहा कि इन उल्लेखनीय पहलों में जीनोमइंडिया शामिल है, जो 99 जनसंख्या समूहों के 10,000 व्यक्तियों के जीनोम को अनुक्रमित करने का एक राष्ट्रव्यापी प्रयास है। इस वर्ष की शुरुआत में जारी किए गए डेटा से व्यक्तिगत चिकित्सा को जानकारी मिलने और शोधकर्ताओं को भारतीय आबादी के अनुरूप निदान विकसित करने में मदद मिलने की उम्मीद है। गोखले ने गंभीर हीमोफीलिया ए के लिए लेंटिवायरल वेक्टर का उपयोग करके भारत के पहले मानव जीन थेरेपी परीक्षण पर भी प्रकाश डाला। गोखले ने कहा कि भारत की वैक्सीन प्रतिक्रिया ने डीबीटी समर्थित नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र की क्षमता को प्रदर्शित किया है। मिशन कोविड सुरक्षाष के तहत, डीबीटी समर्थन से विकसित पांच कोविड-19 टीकों को आपातकालीन स्वीकृति मिली, जिसमें दुनिया की पहली थर्मोस्टेबल mRNA वैक्सीन GEMCOV-AC-19 भी शामिल है। ब्रीफिंग में साझा किए गए दस्तावेज के अनुसार, अन्य उत्पादों में इंट्रानैसल कोविड-19 वैक्सीन और भारत का पहला स्वदेशी चतुर्भुज एचपीवी वैक्सीन, सर्वावैक शामिल है, जो अब राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम का हिस्सा है। भारतीय वैज्ञानिकों ने वैश्विक प्रधान फसल, ब्रेड गेहूं के जटिल जीनोम को डिकोड करने में योगदान दिया और 94 प्रतिशत कवरेज के साथ एक संदर्भ जीनोम प्रकाशित किया। अन्य शोधों से पता चला है कि माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस यकृत कोशिकाओं को कैसे संक्रमित कर सकता है और टीबी उपचार प्रभावकारिता को कम कर सकता है, जबकि टॉरिन के स्तर पर एक अध्ययन ने सुझाव दिया कि अमीनो एसिड उम्र बढ़ने को प्रभावित कर सकता है। गोखले ने कहा कि भारत का बायोटेक स्टार्टअप परिदृश्य नाटकीय रूप से बदल गया है।

दवा की खोज के लिए नए रास्ते तलाशें, नए जीवाणु मार्गों और तंत्रों को लक्षित करें: डॉ. अतुल गोगिया

प्राप्त समाचार के अनुसार नए संक्रमणरोधी के विकास के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सर गंगा राम अस्पताल के कंसल्टेंट फिजीशियन डॉ. अतुल गोगिया ने कहा कि हमें दवा की खोज के लिए नए रास्ते तलाशने चाहिए, नए जीवाणु मार्गों और तंत्रों को लक्षित करना चाहिए। नई दवाओं को जीवाणु विषाणु कारकों को लक्षित करने की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण प्रतिरोध विकास के लिए चयनात्मक दबाव को कम कर सकता है। उन्होंने कहा कि ऐसी दवाएँ विकसित करने की आवश्यकता है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाएँ जो संक्रमणों से लड़ने में मदद कर सकती हैं और एंटीबायोटिक दवाओं पर निर्भरता को कम कर सकती हैं। हमें संयोजन उपचारों की खोज करने की आवश्यकता है। विभिन्न क्रियाविधि वाली कई दवाओं के उपयोग से बैक्टीरिया के लिए प्रतिरोध विक. सित करना अधिक कठिन हो सकता है। जीवाणुरोधी गुणों वाली अन्य उद्देश्यों के लिए विकसित मौजूदा दवाओं का पुन: उपयोग करने की संभावना तलाशी जा सकती है, डॉ. गोगिया ने कहा।

रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) सबसे गंभीर स्वास्थ्य खतरों में से एक है। दवा प्रति. रोधी बैक्टीरिया, वायरस, कवक और परजी. वियों के बढ़ने से दशकों की चिकित्सा प्रगति को नुकसान पहुँचने का खतरा है, जिससे एक बार उपचार योग्य संक्रमण जीवन के लिए खतरा बन सकते हैं। हम तेजी से एंटीबायोटिक के बाद के युग की ओर बढ़ रहे हैं, जहाँ आम संक्रमण एक बार फिर से मृत्यु का प्रमुख कारण बन सकता है। एएमआर अब इन चिकित्सा प्रगति को उलटने की धमकी दे रहा है। उन्होंने कहा कि नए संक्रमणरोधी का विकास सिर्फ वैज्ञानिक अनिवार्यता नहीं है; यह वैश्विक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। नई एंटीबायोटिक दवाओं की मौजूदा पाइपलाइन चिंताजनक रूप से छोटी है। कई मौजूदा दवाएँ अपनी प्रभावशीलता खो रही हैं। मानव और पशु स्वास्थ्य में एंटीबायोटिक दवाओं के अत्यधिक उपयोग और दुरुपयोग ने प्रतिरोध के विकास और प्रसार को बढ़ावा दिया है।

बैक्टीरिया, उल्लेखनीय विकासवादी तंत्रों के माध्यम से, इन दवाओं के प्रभावों से बचने के लिए रणनीतियों को अनुकूलित और विकसित करते हैं। इसमें दवा के लक्ष्य को बदलना, एंटीबायोटिक दवाओं को निष्क्रिय करने वाले एंजाइम का उत्पादन करना और बैक्टीरिया को. शिकाओं में दवा के अवशोषण को कम करना शामिल है। एएमआर के परिणाम दूरगामी हैं। संक्रमण जो कभी एंटीबायोटिक दवाओं से आसानी से ठीक हो जाते थे, जैसे कि निमो. निया, मूत्र पथ के संक्रमण और सेप्सिस, का प्रबंधन करना तेजी से मुश्किल होता जा रहा है। नियमित शल्य चिकित्सा प्रक्रियाएँ, अंग प्रत्यारोपण और कैंसर के उपचार, जो सभी संक्रमणों को रोकने और उनका इलाज करने के लिए प्रभावी एंटीबायोटिक दवाओं पर निर्भर करते हैं, तेजी से जोखिम भरे होते जा रहे हैं। डॉ. गोगिया ने फार्माबिज को ईमेल के माध्यम से बताया कि वैश्विक स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव बहुत भयावह है। अनुमान है कि यदि हम निर्णायक रूप से कार्य करने में विफल रहे तो 2050 तक प्रतिवर्ष लाखों लोगों की मृत्यु होगी और खरबों डॉलर का आर्थिक नुकसान होगा। नए संक्रमणरोधी के विकास के लिए बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। सर गंगा राम अस्पताल के कंसल्टेंट फिजीशियन डॉ. अतुल गोगिया ने कहा कि हमें दवा की खोज के लिए नए रास्ते तलाशने चाहिए, नए जीवाणु मार्गों और तंत्रों को लक्षित करना चाहिए।

राष्ट्रपति मुर्मू उत्तर प्रदेश में एम्स-गोरखपुर के पहले दीक्षांत समारोह में शामिल होंगे

गोरखपुर: प्राप्त समाचार के अनुसार राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू गोरखपुर में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के पहले दीक्षांत समारोह में शामिल होंगी। राष्ट्रपति संस्थान के पहले स्नातक बैच के मेधावी छात्रों को पदक प्रदान करेंगी और नवोदित चिकित्सा पेशेवरों को प्रेरित करने के लिए मुख्य भाषण देंगी। राज्य सरकार द्वारा जारी एक बयान में कहा गया कि एम्स-गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश, पड़ोसी बिहार और यहां तक कि नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में चिकित्सा सेवाओं के लिए एक स्वप्निल स्थान के रूप में उभरा है। इसमें कहा गया है कि जो कभी एक दूर की उम्मीद थी, वह अब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा सांसद के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान चलाए गए आंदोलन की बदौलत एक स्वास्थ्य सेवा वास्तविकता बन गई है। इसमें कहा गया है कि 22 जुलाई 2016 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री स्वास्थ्य सुरक्षा योजना के तहत गोरखपुर में एम्स की आधारशिला रखी थी। इसका उद्घाटन 7 दिसंबर 2021 को मोदी ने किया, जो क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवा की कहानी में एक नया अध्याय है। इसमें कहा गया है कि पिछले चार वर्षों में एम्स-गोरखपुर पूर्वी उत्तर प्रदेश के लगभग पांच करोड़ लोगों के लिए जीवन रेखा बन गया है, जो बिहार और नेपाल के कुछ हिस्सों की सीमा से सटा हुआ है। अस्पतालों में सबसे अधिक पढ़ा गया अपोलो हॉस्पिटल्स डिजी हेल्थ, फार्मेसी कारोबार को अलग करेगा मणिपाल हेल्थ एंटरप्राइजेज 6,838 करोड़ रुपये की बोली के साथ सह्याद्री हॉस्पिटल्स को खरीदने की दौड़ में सबसे आगे टाटा अस्पताल में भारत की सबसे अधिक विकिरण खुराक का उपयोग किया जा रहा है, जिससे बच्चों के कैंसर के उपचार की लागत में कमी आ सकती है विज्ञान-फंतासी नहीं, बल्कि स्मार्ट: विशेषज्ञों का कहना है कि भारत की अस्पताल क्रांति वास्तविकता में निहित है।

926 करोड़ की दवाइयां जांच के बिना मरीजों को बांटी

लखनऊ (उप्र)। 926 करोड़ की दवाइयां जांच के बिना मरीजों को बांट दी गई। यह खुलासा नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (कैग) की ऑडिट रिपोर्ट में हुआ है। जिला अस्पतालों ने 926 करोड़ रुपये की दवाएं बिना किसी जांचके मरीजों को बांट दीं। यह खरीद 2020 से 2024 के बीच की गई और दवाओं की गुणवत्ता जांचने की जिम्मेदारी नहीं निभाई गई। न तो ड्रग इंस्पेक्टरों ने सैंपल लिए और न ही अस्पतालों ने किसी एजेंसी से जांच करवाई। इससे दवा सप्लाई में गहराई से जुड़े भ्रष्टाचार और कमीशनखोरी की बू आ रही है। इस खुलासे से स्वास्थ्य विभाग और प्रशासन दोनों की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। रिपोर्ट के अनुसार औषधि और रसायन मद से कुल 926 करोड़ की दवा, सिरिंज और इंट्रावेनस फ्लूइड आदि की खरीद हुई।

मई 2025 में भारत का फार्मा निर्यात 7.38% बढ़ेगा, मजबूत वैश्विक मांग से प्रेरित

नई दिल्ली: फार्मास्यूटिकल्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफ इंडिया (फार्मेक्सिल) द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, भारत का दवा निर्यात मई 2025 में 4,961.71 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया, जो पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 7.38 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। फार्मेक्सिल के अनुसार, यह वृद्धि इस क्षेत्र की निरंतर गति और वैश्विक स्वास्थ्य सेवा आपूर्ति श्रृंखलाओं में इसकी विस्तारित भूमिका को रेखांकित करती है। यह संकेत दिया गया है कि फॉर्मूलेशन और बायोलॉजिकल सबसे बड़ी निर्यात श्रेणी बनी रही, जिसका कुल फार्मा निर्यात में 75.74 प्रतिशत हिस्सा था। इसके बाद बल्क ड्रग्स और ड्रग इंटरमीडिएट्स का स्थान है, जिसमें 4.40 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। वैक्सीन का निर्यात 13.64 प्रतिशत बढ़कर 190.13 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। नाफ्टा, यूरोप, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका ने मिलकर कुल फार्मा निर्यात में 76 प्रतिशत का योगदान दिया। इस अवधि के दौरान नए अनुबंधित क्षेत्र के रूप में आसियान बाजारों का योगदान 4.88 प्रतिशत था। मई 2025 में शीर्ष पांच निर्यात गंतव्य संयुक्त राज्य अमेरिका, यूके, ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और फ्रांस थे। अमेरिका को निर्यात, जो भारत के फार्मा निर्यात का 34.5 प्रतिशत है, 1.50 प्रतिशत बढ़कर 1,711.75 मिलियन अमरीकी डॉलर हो गया। यूरोप और अफ्रीका ने भी क्रमश: 3.14 प्रतिशत और 1.71 प्रतिशत का लाभ दर्ज किया। इस विकास के आलोक में, फार्मेक्सिल के अध्यक्ष नमित जोशी ने भारत-यूके मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) वार्ता में प्रगति का स्वागत किया। परिषद ने कहा कि ये प्रगति भारत के फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में एक ट्रिलियन डॉलर के व्यापार लक्ष्य को प्राप्त करने के व्यापक लक्ष्य का समर्थन करती है, जिसमें डिजिटल नियामक सुधार, टिकाऊ विनिर्माण और विस्तारित वैश्विक साझेदारी पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

PD PAPER JULY 2025_32 Inch January. 2021.qxd 7/29/2025 11:39 AM Page 7

ल्यूपिन ने अमेरिका में नेजल स्प्रे लॉन्च किया

नई दिल्ली: फार्मा प्रमुख ल्यूपिन लिमिटेड ने कहा कि उसने बहती नाक के इलाज में इस्तेमाल होने वाला इप्रेट्रोपियम ब्रोमाइड नेजल स्प्रे अमेरिकी बाजार में लॉन्च किया है। ल्यूपिन लिमिटेड ने एक नियामक फाइलिंग में कहा कि अमेरिका में लॉन्च किया गया। इप्रेट्रोपियम ब्रोमाइड नेजल सॉल्यूशन 0.03 प्रतिशत और 0.06 प्रतिशत की ताकत का है। इप्रेट्रोपियम ब्रोमाइड नेजल स्प्रे 0.03 प्रतिशत और 0.06 प्रतिशत बोह्रिंजर इंगेलहेम फार्मास्यूटिकल्स, इंक की समान शक्तियों में एट्रोवेंट नेजल स्प्रे के जैव समतुल्य हैं। ल्यूपिन ने कहा कि इप्रेट्रोपियम ब्रोमाइड नेजल स्प्रे 0.03 प्रतिशत वयस्कों और 6 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चों में एलर्जिक और नॉनएलर्जिक बारहमासी राइनाइटिस से जुड़े राइनोरिया के लक्षणात्मक राहत के लिए संकेतित है। कंपनी ने कहा कि इप्रेट्रोपियम ब्रोमाइड नेजल स्प्रे 0.06 प्रतिशत वयस्कों और 5 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चों के लिए सामान्य सर्दी या मौसमी एलर्जिक राइनाइटिस से जुड़े राइनोरिया के लक्षणात्मक राहत के लिए संकेतित है।

छोटी दवा कंपनियां केंद्र सरकार के रडार पर आई

नई दिल्ली। छोटी दवा कंपनियां केंद्र सरकार के रडार पर आ गई हैं। खास तौर पर ग्रामीण इलाकों में दवाइयाँ सप्लाई करने वाली फार्मा कंपनियां नियामक जांच के दायरे में हैं। भारतीय औषधि महानियंत्रक ने राज्य अधिकारियों को उनकी गतिविधियों पर कड़ी निगरानी रखने का निर्देश दिया है। कहा है कि वे राज्य लाइसेंसिंग प्राधिकरणों के जरिए दवा गुणवत्ता मानकों का उल्लंघन करने वालों पर सख्त कार्रवाई करें। यह कदम दवा सप्लाई से जुड़े कंपनियों की गुणवत्ता और अनुपालन प्रथाओं पर बढ़ती चिंताओं के बीच उठाया गया है। शीर्ष औषधि नियामक एजेंसी ने नकली और गैर-मानक गुणवत्ता (एनएसक्यू) वाली दवाओं के बार-बार निर्माण के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने का भी आह्वान किया है। राज्यों से कहा गया है कि वे किसी भी नियामक कार्रवाई के बारे में सीडीएससीओ को सूचित करें। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी ने बताया कि हम अभी भी शेड्यूल एम के अनुपालन पर प्रतिक्रिया के इंतजार में हैं। ज्यादातर छोटी दवा कंपनियाँ गुणवत्ता जांच से निपटने में असमर्थ हैं। सरकार को पूरा भरोसा है कि उचित निगरानी के बिना, ये कंपनियाँ कम सेवा वाले क्षेत्रों में दवा सुरक्षा के लिए जोखिम पैदा करती हैं। सीडीएससीओ ने देशभर में 1,000 से अधिक जोखिम-आधारित निरीक्षण (आरबीआई) किए हैं। ये निरीक्षण दवा निर्माताओं के बीच गैर-अनुपालन की पहचान करने और निगरानी ढांचे को मजबूत करने में महत्वपूर्ण रहे हैं। इसके बावजूद, अनेक विनियामक चुनौतियां बनी हुई हैं, और सीडीएससीओ ने राज्यों से तत्काल सुधारों को प्राथमिकता देने को कहा है। पहला कदम संशोधित अनुसूची एम को अपनाना है।

एनजीटी ने कानपुर क्षेत्र में खतरनाक जल प्रदूषण पर एम्स से हस्तक्षेप की मांग की

नई दिल्ली: राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर, कानपुर देहात और फतेहपुर जिलों में निवासियों को प्रभावित करने वाले गंभीर जल प्रदूषण पर कड़ा संज्ञान लिया और अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), दिल्ली को हस्तक्षेप करने और क्रोमियम और पारा जैसे विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से होने वाले सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभाव का आकलन करने का निर्देश दिया। 1 जुलाई, 2025 के आदेश में न्यायाधिकरण ने क्षेत्र में हाल ही में आयोजित स्वास्थ्य शिविरों के दौरान निवासियों के रक्त के नमूनों में भारी धातुओं के पाए जाने की रिपोर्ट पर गहरी चिंता व्यक्त की। इस चिंताजनक डेटा के बावजूद, एनजीटी ने कहा कि अभी तक कोई प्रभावी चिकित्सा प्रतिक्रिया नहीं की गई है। न्यायमूर्ति प्रकाश श्रीवास्तव (अध्यक्ष), न्यायिक सदस्य सुधीर अग्रवाल और विशेषज्ञ सदस्य डॉ. ए. सेंथिल वेल की पीठ ने कहा, इस मुद्दे की गंभीरता को देखते हुए और यह मानते हुए कि बड़ी संख्या में लोग क्रोमियम और पारा जैसी भारी धातुओं से प्रभावित हैं या प्रभावित होने की संभावना है, और प्रभावी चिकित्सा सहायता की कमी को देखते हुए, हम एम्स, नई दिल्ली के निदेशक को प्रतिवादी के रूप में शामिल करना आवश्यक समझते हैं। न्यायाधिकरण ने एम्स को स्थिति की गंभीरता का आकलन करने के लिए प्रासंगिक रिपोर्ट और कार्यवाही डाउनलोड करने का निर्देश दिया है। इसने जोखिम की सीमा निर्धारित करने और उचित उपचार की सिफारिश करने के लिए प्रभावित क्षेत्रों में विशेषज्ञों की एक टीम भेजने की भी अनुमति दी है। एम्स को आठ सप्ताह के भीतर एक व्यापक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा गया है। मामले की अगली सुनवाई 7 अक्टूबर, 2025 को होगी। पिछली सुनवाई में एनजीटी ने जल प्रदूषण संकट को हल करने के उद्देश्य से पहले दिए गए निर्देशों को लागू करने में विफल रहने के लिए राज्य के अधिकारियों की तीखी आलोचना की थी। न्यायाधिकरण ने दूषित भूजल और स्वच्छ पेयजल तक पहुँच की कमी के कारण हजारों निवासियों द्वारा सामना की जा रही निरंतर कठिनाइयों पर जोर दिया। एनजीटी ने भूजल प्रदूषण के लगातार स्रोत के रूप में छोड़े गए क्रोमियम कचरे की ओर भी इशारा किया और चेतावनी दी कि अगर तत्काल रोकथाम और सफाई के उपाय नहीं किए गए तो सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए और भी खतरा पैदा हो सकता है। जवाब में, उत्तर प्रदेश के मुख्य सचिव को प्रभावित आबादी को स्वच्छ पानी और चिकित्सा सहायता की तत्काल आपूर्ति सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है।

फॉर्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष के बंगले पर सीबीआई की रेड

अहमदाबाद। फॉर्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष के बंगले पर सीबीआई की रेड का समाचार मिला है। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने फार्मेसी काउंसिल ऑफ इंडिया के चेयरमैन मोंटू पटेल पर शिकंजा कसा है। सीबीआई ने अहमदाबाद में झुंडाल स्थित बंगले पर छापा मारा है। यह छापेमारी अवैध कॉलेजों और अन्य घोटालों के संबंध में की गई। उन पर दिल्ली स्थित अपने कार्यालय और घर पर रिश्वत लेने का आरोप है। मोंटू पटेल एबीवीपी पैनल के चुनाव लड़कर निर्विरोध अध्यक्ष चुने गए थे लेकिन अब सीबीआई की छापेमारी ने पटेल की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। डॉ. मोंटू कुमार पटेल गुजरात स्टेट फॉर्मेसी काउंसिल के अध्यक्ष हैं।

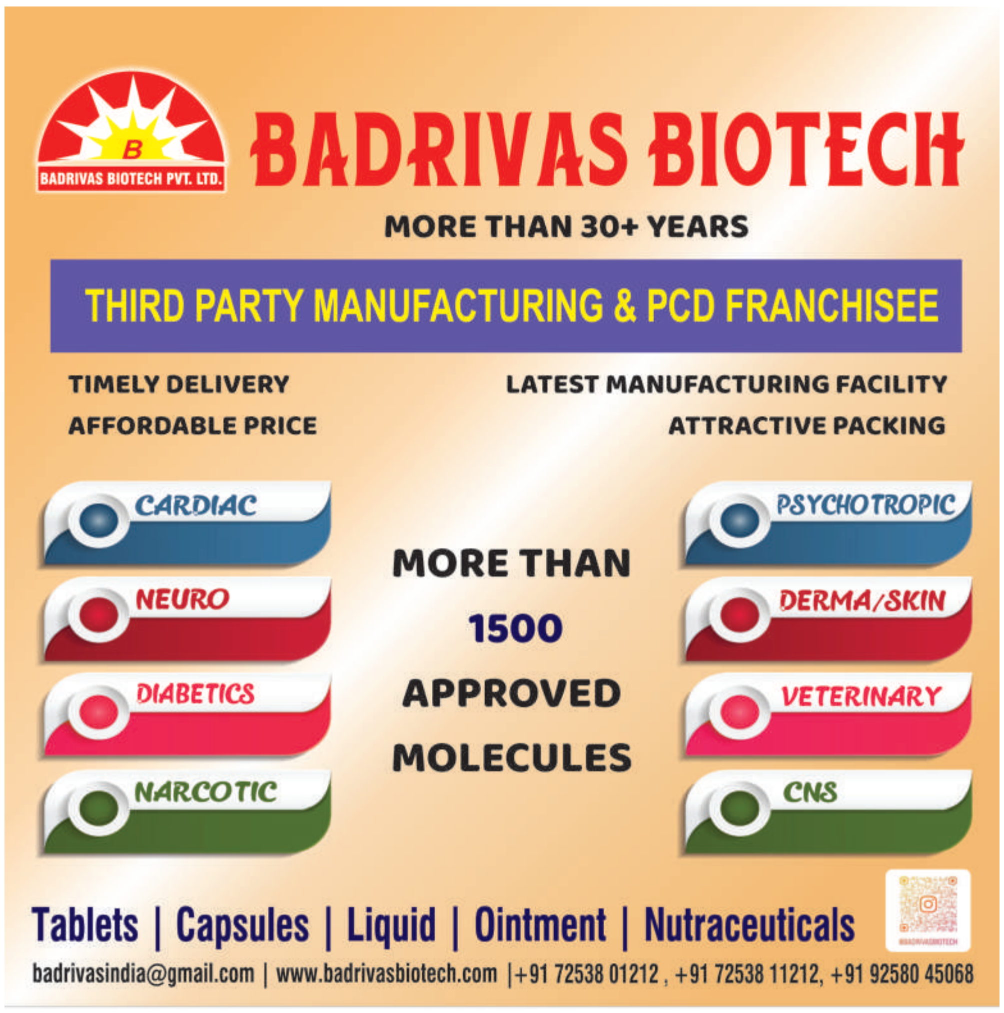

भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र बुनियादी ढांचे और कुशल पेशेवरों की भारी कमी से जूझ रहा: डॉ राज नागरकर

बेंगलुरु: भारतीय स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र में परिवर्तनकारी विकास हुआ है। एक ओर, यह चिकित्सा नवाचार और पहुंच में वैश्विक नेता के रूप में उभरने के लिए महत्वाकांक्षी रूप से काम कर रहा है। दूसरी ओर, यह बुनियादी ढांचे और कुशल चिकित्सा पेशेवरों की तीव्र कमी से जूझ रहा है, एचसीजी मानवता कैंसर सेंटर के प्रबंध निदेशक, मुख्य सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट और रोबोटिक सर्जन डॉ राज नागरकर ने कहा। आयुष्मान भारत योजना, एआई-संचालित डायग्नोस्टिक्स और मोबाइल स्वास्थ्य ऐप जैसी तकनीकी प्रगति ने रोगी देखभाल में दक्षता पैदा की है। साथ ही, भारत का फार्मा उद्योग, जिसे दुनिया की फार्मेसीश के रूप में मान्यता प्राप्त है, वैश्विक स्तर पर सस्ती जेनेरिक दवाओं की आपूर्ति जारी रखता है। उन्होंने कहा कि कोविड-19 महामारी के दौरान टीकों की तेजी से तैनाती ने भारत की रसद क्षमता और वैज्ञानिक क्षमता को प्रदर्शित किया, 2023 तक 2.2 बिलियन से अधिक खुराक दी जाएंगी। डॉ. नागरकर ने कहा कि मेडिकल कॉलेजों की संख्या 2014 में 387 से बढ़कर 2024 तक 700 से अधिक हो गई है। राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य मिशन (एनडीएचएम) जैसी पहल एकीकृत स्वास्थ्य रिकॉर्ड के लिए एक ढांचा तैयार करती है, निर्बाध डेटा साझाकरण को सक्षम करती है और देखभाल समन्वय में सुधार करती है और फिर भी इसमें अथक चुनौतियां हैं। लैंसेट अध्ययन का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य देखभाल लागत के कारण सालाना 55 मिलियन भारतीय गरीबी में धकेले जाते हैं। भारत में डॉक्टर-रोगी अनुपात 1:834 है, जो डब्ल्यूएचओ द्वारा अनुशंसित 1:1,000 से बेहतर है, लेकिन यह आंकड़ा क्षेत्रीय असमानताओं को छुपाता है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर अनुपात 1:10,000 से कम होता है। इसके अलावा, देखभाल की गुणवत्ता भी व्यापक रूप से भिन्न होती है। जहां निजी अस्पताल उन्नत उपचार प्रदान करते हैं, वहीं सार्वजनिक सुविधाएं अक्सर पुराने उपकरणों और अधिक काम के बोझ से दबे कर्मचारियों से जूझती हैं इसके अलावा, मधुमेह और हृदय संबंधी बीमारियों जैसे गैर-संचारी रोग (एनसीडी) बढ़ रहे हैं, और पहले से ही तनावपूर्ण व्यवस्था पर दबाव डाल रहे हैं।

भारत आकर किडनी बेच रहे बांग्लादेशी: तस्करी का शिकार हुआ पूरा गांव; पैसा भी पूरा नहीं मिला; लोग सिर्फ एक किडनी के सहारे जिंदा

बांग्लादेश के उत्तर-पश्चिमी जिले जॉयपुरहाट का एक छोटा-सा गांव बाइगुनी अब श्वन किडनी विलेजश के नाम से कुख्यात हो चुका है। यहां हर 35 में से एक व्यक्ति अपनी किडनी बेच चुका है। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुता. बिक भारत और बांग्लादेश के बीच चल रही इस अवैध अंग तस्करी ने कई परिवारों की जिंदगियों को बर्बाद कर दिया है। 45 वर्षीय सफीरुद्दीन इसी गांव के निवासी हैं। 2024 की गर्मियों में उन्होंने भारत आकर 2.5 लाख रुपए में अपनी किडनी बेच दी थी। उनका मकसद गरीबी से निकलना और अपने तीन बच्चों के लिए घर बनाना था, लेकिन अब उनका मकान अधूरा है, शरीर में लगातार दर्द है और काम करने की ताकत नहीं बची।

सफीरुद्दीन कहते हैं, दलालों ने कहा था सब आसान होगा। मैंने सब कुछ बच्चों के लिए किया। लेकिन ऑपरेशन के बाद मेरा पासपोर्ट, मेडिकल पर्चियां और दवाइयां गायब हो गईं।

फर्जी दस्तावेजों से मरीजों का रिश्तेदार बना रहे दलाल: भारत में मानव अंग प्रत्यारोपण अधिनियम (THOA) 1994 के मुताबिक , किडनी का दान सिर्फ नजदीकी रिश्तेदारों के बीच या सरकारी मंजूरी से ही किया जा सकता है। रिपोर्ट के मुता. बिक दलाल नकली दस्तावेजों और रिश्तेदारी के फर्जी सबूतों के जरिए इस नियम को चकमा दे देते हैं। अल जजीरा की रिपोर्ट में WHO के विशेषज्ञ मोनिर मनीरुज्जमां के हवाले से बताया गया है कि फर्जी पहचान पत्र, नोटरी सर्टिफिकेट और DNA रिपोर्ट तक बनवाई जाती हैं।